

Item Code: 641

Participant Code: 101

तुम्हारे इतज़ार में "

वो दिन कव आपगी? मेरी ज़िंदगी पूरा करने वाली वो दिन? मेहसूस करवा रही हूँ मेरे अंदर तेरे दिल की थड़कन। अब पता चला मुझे क्या में प्रक स्त्री वनी।

पूरा सागर भी बुझा नहीं पामगी मेरी ज्यास पर तम्हारी एक मस्क्राहट कर सकता हैं। पानी के बिना सागर मेर्सें।, तारों के बिना आसमान मेरा, तम्हारे बिना में कुछ भी नहीं।

पानी देना हैं मुझे तुम्हे, मेरे आशाओं के प्राक्त हो तुम। सिखाना हैं मुझे तुम्हे, अपनी खुद भी गगन दुँढने को।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

में तुम्हे देख सम्मी हूँ कोई भगना नही देख सम्मा। में तुम्हे सुन सक्ती हूँ कोई भगना नही सुन सक्ता। जहीं तो बात हैं; तुम मेरे आहो नहीं पूरे हो!

तुम्हारी जन्म सिर्फ तुम्हारी 'नहीं, मेरी मणी जन्म की तैयारी भी हैं। मॉसम को बद्दल ने को कही, समय से द्वांडने को कही बाहर आने को क्या देरी हैं?

उन्हों ने कहा मुझसे, में जब बोई वह हैंसी थी। पता हैं! मेरे जान, बसंत के आआंगों तम मेरे जीवन में। जन्दी आओं मेरे जान क्या कर रहे हो माँ को इंतजार

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).